पाठ 4: एही ठैयाँ झुलनी हेरानी हो रामा!

📖 पाठ का सार (Summary)

शिवप्रसाद मिश्र 'रुद्र' द्वारा रचित यह कहानी आज़ादी के आंदोलन के दौर की बनारस (काशी) की पृष्ठभूमि पर आधारित है। 'दुलारी' एक मशहूर गायिका (गौन्हारिन) है। 'टुन्नू' एक युवा कवि है जो दुलारी से एकतरफा प्रेम करता है और उसके लिए अपनी जान दे देता है। 1920 के दशक में जब अंग्रेज़ों के खिलाफ विदेशी वस्त्रों की होली जलाई जा रही थी, तब टुन्नू भी उस आंदोलन में शामिल होता है। अंग्रेज़ अधिकारी अली सगीर की क्रूरता से टुन्नू की हत्या हो जाती है। यह कहानी दर्शाती है कि देश-प्रेम और आज़ादी के आंदोलन में समाज के उपेक्षित और निचले तबके (जैसे गायिका दुलारी और गरीब कवि टुन्नू) ने भी अपना अद्वितीय योगदान दिया था।

प्रश्न 1: दुलारी का टुन्नू से पहली बार परिचय कहाँ और किस रूप में हुआ?

दुलारी का टुन्नू से पहली बार परिचय **खोजवाँ बाज़ार** में एक कजली दंगल (गायन प्रतियोगिता) के दौरान हुआ था। दुलारी एक प्रसिद्ध और स्थापित गायिका थी जो 'बजरडीहा' वालों की ओर से गा रही थी। जबकि टुन्नू एक नवयुवक और नया कजली गायक था, जो 'खोजवाँ' वालों की ओर से दुलारी के मुकाबले में खड़ा किया गया था। इस प्रकार उनका पहला परिचय एक-दूसरे के प्रतिद्वंद्वी (Competitor) के रूप में हुआ था।

प्रश्न 2: दुलारी टुन्नू को क्यों डाँटती है और टुन्नू के उपहार को वह किस भाव से लेती है?

दुलारी टुन्नू को इसलिए डाँटती है क्योंकि वह उम्र में उससे बहुत छोटा है और वह एक मशहूर गायिका होने के नाते इस तरह के भावुक प्रेम को अपने लिए अनुचित समझती है। वह समाज की नज़र में उसे बचाना चाहती है।
परन्तु जब टुन्नू अपने खून-पसीने की कमाई से दुलारी के लिए 'खद्दर की धोती' (देशी वस्त्र) का उपहार लाता है, तो दुलारी उसे ठुकराती नहीं है। वह ऊपर से डाँटती है लेकिन भीतर से उसके उपहार को **अत्यंत श्रद्धा, आत्मीयता और प्रेम के भाव** से स्वीकार करती है, क्योंकि उस उपहार में टुन्नू का सच्चा प्रेम और देशभक्ति छिपी थी।

प्रश्न 3: टुन्नू की मृत्यु का दुलारी पर क्या प्रभाव पड़ा?

टुन्नू की मृत्यु की खबर सुनकर दुलारी अंदर तक हिल गई और उसे गहरा आघात लगा। जो दुलारी कभी विदेशी वस्त्रों का समर्थन करती थी और टुन्नू को डाँटती थी, उसने टुन्नू की मृत्यु के बाद अपने विदेशी रेशमी वस्त्र उतार फेंके और टुन्नू द्वारा दी गई 'खद्दर की धोती' पहन ली। उसने पुलिस (अली सगीर) के सामने ही खुलेआम देश-प्रेम के गीत (एही ठैयाँ झुलनी हेरानी हो रामा!) गाकर अपना विरोध दर्ज़ किया। टुन्नू की शहादत ने दुलारी को एक सच्ची देशभक्त बना दिया।

Schorbit